

# आदमी नामा

---

## व्याख्या

'आदमीनामा' कविता में मानव के विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है। कवि के अनुसार मानव में अनेक संभावनाएँ छिपी हुई हैं। उसकी परिस्थियाँ और भाग्य भी भिन्न हैं जिसके कारण उसे भिन्न-भिन्न रूपों में जीवन जीना पड़ता है।

(1)

इन पंक्तियों में नजीर ने कहा है कि इस दुनिया में सभी आदमी हैं। बादशाह भी आदमी है तथा गरीब भी आदमी ही है। मालदार भी आदमी ही है और कमजोर भी आदमी है। जिसे खाने की कमी नहीं है वो भी आदमी है और जिसे मुश्किल से रोटी मिलती है वो भी आदमी ही है।

(2)

इस भाग में नजीर ने आदमी के विभिन्न कामों के बारे में बतलाया है। मस्जिद का भी निर्माण आदमी ने किया है और उसके अंदर उपदेश देने का काम भी आदमी ही करते हैं साथ ही वहाँ जाकर कुरान-नमाज़ भी आदमी ही अदा करते हैं। मस्जिद के बाहर जूतियाँ चुराने का काम आदमी ही करता है तथा उनको भगाने के लिए भी आदमी ही रहता है।

(3)

इस भाग में नजीर ने बताया है की एक आदमी दूसरे की जान लेने में लगा रहता है तो दूसरा आदमी किसी की जान बचाने में लगा रहता है। कोई आदमी किसी की इज्जत उतारता है तो मदद की पुकार सुनकर भी उसे बचाने कोई आदमी ही आता है।

(4)

इन पंक्तियों द्वारा स्पष्ट किया है की इस दुनिया सब कुछ आदमी ही करते हैं। आदमी ही आदमी का मुरीद है तथा आदमी ही आदमी का दुश्मन। बुरे और अच्छे दोनों आदमी ही कहलाते हैं।

## कवि परिचय

### नजीर अकबराबादी

इनका जन्म आगरा शहर में सन 1735 में हुआ। इन्होंने आगरा के अरबी-फ़ारसी के मशहूर अदीबों से तालीम हासिल की। नजीर हिन्दू त्योहारों में बहुत दिलचस्पी लेते थे और शामिल

होकर दिलोजान से लुत्फ़ उठाते थे। नजीर दुनिया के रंग में रंगे हुए महाकवि थे।

### कठिन शब्दों के अर्थ

- बादशाह - राजा
- मुफ़लिस - गरीब
- गदा - भिखारी
- जरदार - मालदार
- बेनवा - कमजोर
- निअमत - स्वादिष्ट भोजन
- इममम - नमाज पढ़नेवाले
- ताड़ता - भांप लेना
- खुतबारव्वां - कुरान शरीफ का अर्थ बतानेवाला
- अशराफ़ - शरीफ
- दिल-पजीर - दिल पसंद